आरती श्री महादेव जी की

जय शंकर शिवशंकर जय जय त्रिपुरारी ।
जय सुरपति त्रिभुवन पति जय जय असुरारी ।।

ॐ हर हर हर महादेव....

सत्य सनातन सुन्दर शिव ! सबके स्वामी ।
अविकारी अविनाशी अज अन्तर्यामी ।।ॐ।।

आदि अन्त अनामय सकल कलाधारी ।
अमल अरूप अगोचर अविचल अघहारी ।।ॐ।।

क्षण महं होत प्रसन्न सदाशिव तुम औढ़रदानी ।
तुम ही कर्ता भर्ता महिमा जग जानी ।।ॐ।।

मणिमय भवन निवासी, सब सम्पत्ती त्यागी ।
नित श्मशान विहारी योगी वैरागी ।।ॐ।।

छाल कपाल गरल गल मुण्डमाल व्याली।
चिताभस्म तन शोभित नयन धरे लाली ।।ॐ।।

प्रेत पिशाच सुसेवित, पीत जटाधारी ।
विवसन विकट रूपधर रूद्र प्रलयकारी ।।ॐ।।

शुभ्र सौम्य सुरसरिधर शशिधर सुखकारी ।
अतिकमनीय शांतिकर शिव मुनि मनहारी।।ॐ।।

निर्गुण सगुण निरंजन नवतम नित्य प्रभो ।
कालरूप केवल हर कालातीत विभो ।।ॐ।।

सत् चित् आनन्द रसमय करूणामय धाता ।

प्रेम-सुधा निधि प्रियतम अखिल विश्वत्राता ।।ॐ।।

हम अति दीन दयामय ! चरण शरण दीजै ।
सबबिधि निर्मल मति कर अपना कर लीजै ।।ॐ।।

विवरण

हे शिवशंकर त्रिपुरारी आपकी जय हो । सम्पूर्ण देवताओं के ईश्वर तथा तीनों भुवनों के मालिक एवं राक्षसों का संहार करने वाले शंकर जी की जय हो । हे शंकर जी ! आपको सत्य के स्प में जाना है, आपको सुन्दर के स्प में जाना जाता है तथा आप सबके स्वामी हो ।

आप में किसी प्रकार विकार उत्पन्न नहीं हो सकता, आपका कभी विनाश नहीं हो सकता तथा आप सबके मन की बात को जानने वाले हो । आपका न कहीं आरम्भ है, न कहीं अन्त है, आप आरोग्य हो, आप सभी कलाओं को धारण करने वाले हो । आपका स्प सभी दोषों से रहित है, आपको कोई स्पर्श नहीं कर सकता, अर्थात् आप अज्ञात हो एवं सभी पापों का विनाश करने वाले हो ।

आप एक क्षण मे ही प्रसन्न हो जाते हैं, इसीलिए आपका नाम औढ़रदानी भी हैं । आप ही हमारे कर्ता हो तथा हमारे भरण-पोषण करने वाले भी आप ही हो,
आपके महिमा को सारा जग जानता है, आप मणिमय भवन में निवास करने वाले हो तथा सभी सम्पत्ति को त्यागने वाले हो । आप नित्य श्मशान में विहार करने वाले योगी एवं सभी मोह-माया से वैराग लेने वाले हो ।

आप बाघ का छाल लपेटे रहते हो तथा आप के कण्ठ में विष है एवं मुण्डों की माला धारण किये रहते हो । आप चिताभस्म लपेटे रहते हो, जिससे आपका शरीर शोभित होता है तथा हमेशा आपकी आँखें लाल हुई रहती हैं । पीली जटा को धारण करने वाले शंकर जी आप समय

आने पर रौद्र एवं विकट रूप धारण लेते हो जिससे लगता है कि प्रलय आ गई है ।

आप शुभ्र वर्ण के हो, सुन्दर हो तथा आपके माथे पर चन्द्रमा सुशोभित होता है । आप शांति को देनेवाले हो तथा मुनियों के मन को हरने वाले हो। आप गुणों एवं अवगुणों से युक्त हो तथा नित्य नये दिखने वाले हो। समय के अनुसार आप सभी दुःखों का निवारण करके ऐश्वर्यवान बनाते हो । आप सुन्दर मन एवं आनन्द तथा करूणामयी प्रभु हो ।

प्रेमरूपी अमृत को देनेवाले हो तथा सम्पूर्ण विश्व के ईश्वर हो । हम बहुत ही दुःखी है, हम पर अपनी कृपा करके अपने चरणों में शरण दीजिए तथा सभी प्रकार से हमारे वृद्धि को स्वच्छ एवं शुद्ध बनाकर हमें अपना बना लीजिए ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.